गुरू गरंथ साहिब अनुसार बीज मंतर, मूल मंतर, महाँ मंत्र अते गुर मंत्र की हन

What is Beej Mantar, Mool Mantar, Maha Mantar and Gur Mantar according to Guru Granth Sahib

लेख दा आरंभ लेख दा संखेप लेख दा सार, निचोड़ जाँ मंतव

गुरदुआरा साहिबाँ विच आम तौर ते वेखण विच आउंदा है कि प्रचारक गुरबाणी दे कुझ सबदाँ दे इक्ठ नूं व्ख व्ख तरहाँ दे मंतराँ दा नाँ दिंदे रहिंदे हन, ते उस नूं सिध करन लई तरहाँ तरहाँ दे प्रमाण वी दिंदे रहिंदे हन, परंतू किसे वी प्रचारक ने कदे वी आपणा प्रमाण गुरू गरंथ साहिब दे आधार ते देण दी कोशिश नहीं कीती। उह लोक आम तोर ते हेठ लिखे मंतराँ दा जिकर करदे हन, ते उहनाँ दा रटन करन लई वी प्रेरत करदे रहिंदे हन:

बीज मंत्र = ੴ

मूल मंत्र = ੴ सति नामु, करता पुरखु, निरभउ, निरवैरु, अकाल मूरति, अजूनी, सैभं, गुर प्रसादि ॥ (१)

महाँ मंत्र = मूल मंत्र + सलोक = ੴ सति नामु, करता पुरखु, निरभउ, निरवैरु, अकाल मूरति, अजूनी, सैभं, गुर प्रसादि ॥ ॥ जपु ॥ आदि सचु, जुगादि सचु ॥ है भी सचु, नानक, होसी भी सचु ॥१॥ (१)

गुर मंत्र = वाहिगूरू

गुरू गरंथ साहिब विच अंकित बाणी दे आधार ते वेखिआ जावें ताँ किते वी इह नहीं किहा कि किसे तरहाँ दा कोई खास अ्खरी शबद जाँ कुझ अ्खरी शबदा दा जोड़, **बीज मंत्र है, मूल मंत्र है, महाँ मंत्र है,** जाँ **गुर मंत्र** है। इह सारी वंड साडी आपणी बणाई होई है।

कईआँ ने काव रचना दे आधार ते वी वरगीकरन (Classification) करन दी कोशिश कीती है। पुरातन समिआँ विच रचना लिखण समें लेखक पहिलाँ आपणे इशट बारे बिआन करदा सी, फिर आपणे इशट दा धंनवाद लई मंगलाचरन, आदि लिखिआ जाँदा सी। अ्जकल दे कवी वी आपणी कविता बोलण तों पहिलाँ कुझ पंगतीआँ कहिंदे हन, जो कि अकसर किसे होर कविता जाँ रचनाँ तों हुंदीआँ हन।

हेठ लिखे दोहरे विच दसवें पताशाह गुरू गोबिंद सिंघ साहिब ने सप्शट करके समझाइिआ है कि उहनाँ ने अकाल पुरखु दी आगिआ नाल इह पंथ चलाइिआ है। उहनाँ ने सारे स्खाँ नूं हुकम कीता सी, कि हरेक स्ख ने गुरू गरंथ साहिब नूं ही आपणा गुरू समझणा है। जदों असीं गुरू गरंथ साहिब नूं आपणा गुरू मंन लवाँगे, ताँ गुरू दी देह साडे साहमणे आपणे आप प्रगट हो जावेगी। जिहड़ा वी स्ख अकाल पुरखु नूं मिलणा चाहुंदा है, उह जुगो जुग अटल गुरू गरंथ साहिब विचों खोज सकदा है। इस लई हरेक स्ख लई गुरू ते होर सभ कुझ जो वी उस नूं जीवन दी सेध ते सफलता लई चाहीदा है, उह सभ कुझ गुरू गरंथ साहिब विच अंकित बाणी विचों ही खोजणा है।

दोहरा: आगिआ भई अकाल की तबै चलायो पंथ॥ सब स्खन को हुकम है गुरू मानीए ग्रंथ॥ गुरू ग्रंथ को मानीए प्रगट गुराँ की देह॥ जो प्रभ को मिलबो चहे खोज शबद मैं लेह॥

इस लई असीं आपणी मरज़ी नाल किसे तरहाँ दी वी मोहर नहीं ला सकदे हाँ, जो वी सिखिआ लैणी है जाँ निरणा करना है, उह सिरफ ताँ सिरफ गुरू गरंथ साहिब दे आधार ते ही करना है। आए असीं वी गुरू गरंथ साहिब दे आधार ते इनहाँ मंतराँ बारे खोजण दा यतन करीइे, कि गुरू गरंथ साहिब सानूं की सेध दिंदे हन।

मनुख भाँवें किसे तरहाँ दी बिरती, भाव पशू, चंदरी रूह, मूरख, प्थर दिल वाला होवे। जेकर अकाल पुरखु आपणी मेहर कर के उस दे हिरदे विच नामु टिका देवे ताँ नामु सभ नूं इस संसार रूपी समुंदर विचों तार सकदा है। परंतू इह नामु होर किसे ढंग नाल जाँ किसे धारमिक रसम रिवाज दे करन नाल नहीं मिलदा; इह नामु उस मनुख नूं मिलदा है, जिस दे म्थे ते धुरों अकाल पुरखु दी मेहर अनुसार लिखिआ जाँदा है। चारे जातीआँ विचों कोई वी अकाल पुरखु दा नामु जप के वेख लइे, अकाल पुरखु दा नामु होर सभ मंत्राँ दा मुढ है ते सभ दा गिआन दाता है। अकाल पुरखु दा नामु सारे रोगाँ दी दवाई है। अकाल पुरखु दे गुण गाउणे चंगे भागाँ ते सुख दा रूप है। जिहड़ा मनुख नामु जपदा है उस दी उुँची ज़िंदगी बण जाँदी है, परंतू कोई विरला मनुख ही साध संगति विच रहि के इस नूं हासल करदा है। **इस सबद अनुसार अकाल पुरखु दा नामु ही बीज मंतु है ते गिआन दा सोमा है, जिहड़ा कि सबद गुरू दी संगति विच रहि के मिल सकदा है।**

बीज मंतु सरब को गिआनु ॥ चहु वरना महि जपै कोउ नामु ॥ जो जो जपै तिस की गति होइ ॥ साधसंगि पावै जनु कोइ ॥ (२७४)

http://www.geocities.ws/sarbjitsingh/BookGuruGranthSahibAndNaam.pdf

जिस अवसथा विच मनुख दे मन विच अकाल पुरखु दा नामु आ के टिक जाँदा है, उस अवसथा विच सतिगुरू दे शबद दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दी बाणी नाल मनुख दे हिरदे विच हुलारे पैणे शुरू हो जाँदे हन; मनुख दी सुरति

गुरू दी सिखिआ नाल जाग पैंदी है, सबद गुरू दुआरा मनुख नूं सोझी आ जाँदी है, मनुख दी अकाल पुरखु नाल डूंघी जाण पछाण हो जाँदी है, ते उस नूं अकाल पुरख मिल पैंदा है। जिस मनुख दे अंदर अकाल पुरखु परगट हो जाँदा है, उह सदा रुहानी तौर ते जागदा रहिंदा है, भाव माइिआ दे ह्लिआँ तों सुचेत रहिंदा है। उह माइिआ दी नींद विच कदे वी सउंदा नहीं; उह इक अैसी समाधी विच टिकिआ रहिंदा है जिथों माइिआ दे तिंने गुण ते तिंनाँ लोकाँ दी माइिआ परे ही रहिंदे हन; उह मनुख अकाल पुरखु दा नामु मंत्र आपणे हिरदे विच टिका के र्खदा है, जिस दी बरकति नाल उस दा मन माइिआ वलों सुचेत रहिंदा है , ते उह मनुख अडोल अवसथा विच टिकिआ रहिंदा है। उह मनुख कदे झूठ नहीं बोलदा; आपणीआँ पंज इंद्रिआँ नूं आपणे काबू विच र्खदा है, सतिगुरू दा उपदेश आपणे मन विच साँभ के र्खदा है, आपणा मन, ते आपणा सरीर अकाल पुरखु दे पिआर तों कुरबान कर दिंदा है।

जागतु रहै सु कबहु न सोवै ॥ तीनि तिलोक समाधि पलोवै ॥ बीज मंत्रु लै हिरदै रहै ॥ मनूआ उलटि सुंन महि गहै ॥५॥ (६७४)

गुरू दे सबद दुआरा अकाल पुरखु दी सिफति सालाह दा गीत गाइिआ करो, किउंकि अकाल पुरखु नूं व्सस करन दा इह सभ तों स्रेशट बीज मंत्र है। अकाल पुरखु दे कीरतन दी बरकति नाल भव्खि विच निआसरे जीव नूं वी आसरा मिल जाँदा है। इस लई पूरे गुरू दे चरनाँ ते टिकिआ रहि, भाव पूरे गुरू दी सिखिआ अनुसार जीवन बतीत कर, इस तरहाँ करन नाल कई जनमाँ तों माइिआ दे मोह दी नींद विच सुता होइिआ मनुख वी जाग जाँदा है। जिस मनुख ने अकाल पुरखु दे नामु दा जाप जपि लिआ, जिस मनुख दे हिरदे विच गुरू दी किरपा नाल अकाल पुरखु दा नामु व्सस जाँदा है, उह मनुख संसार रूपी समुंदर तों पार लंघ जाँदा है।

रामकली महला ५ ॥ बीज मंत्रु हरि कीरतनु गाउ ॥ आगै मिली निथावे थाउ ॥ गुर पूरे की चरणी लागु ॥ जनम जनम का सोइिआ जागु ॥१॥ हरि हरि जापु जपला ॥ गुर किरपा ते हिरदै वासै भउजलु पारि परला ॥१॥ रहाउ ॥ (८९१)

इह काम क्रोध, ते हंकार मनुख नूं हरेक तरहाँ दी बड़ी औखिआई देण वाले हन। भले मनुखाँ, देवतिआँ, दैंताँ, ते जगत दे सारे लोकाँ दे आतमक जीवन दा सरमाइिआ, इहनाँ विकाराँ ने लुट लिआ है। जदों जंगल नूं अ्ग ल्गदी है ताँ बहुत सारे घाह बूटे सड़ जाँदे हन, ते कोई विरला हरा रुख ही बचिआ रहिंदा है। इसे तरहाँ इस जगत रूपी जंगल नूं त्रिशना दी अ्ग साड़ रही है, ते कोई विरला आतमक बली मनुख ही बच सकदा है। जिहड़ा इस त्रिशना रूपी अ्ग विच सड़न तों बचिआ है, अैसे बली मनुख दी आतमक अवसथा बिआन नहीं कीती जा सकदी। जदों अकाल पुरखु किरपा कर के आपणी मेहर दी निगाह नाल वेखदा है, आपणे चरनाँ विच जोड़ी र्खदा है, ताँ उस अकाल पुरखु दा प्रेम प्रापत हुंदा है, उस दी भगती दी दात मिलदी है, ते मनुख त्रिशना रूपी अ्ग विच सड़ रहे संसार विच रहिंदिआँ होइिआँ वी आतमक आनंद माणदा रहिंदा है। गुरू साहिब समझाँदे हन कि मेरे हिरदे विच सतिगुरू दा शबद रूपी महाँ बली मंत्र व्सस रिहा है, मैं असचरज ताकत वाले अकाल पुरखु दा नामु सुणदी रहिंदी हाँ, इस वासते इस कालख नाल भरी कोठड़ी वाले संसार विच रहिंदिआँ होइिआँ वी मैं विकाराँ दी कालख नाल काली नहीं होई हाँ, ते मेरा साण सुथरा रंग ही बणिआ होइिआ है।

काजर कोठ महि भई न कारी निरमल बरनु बनिए री ॥ महा मंत्रु गुर हिरदै बसिए अचरज नामु सुनिए री ॥३॥ (३८४)

जिस मनुख उते पूरे गुरू ने किरपा कर द्ति, अकाल पुरखु उस मनुख उते दइिआवान हो जाँदा है, उस दे सारे बंधन क्ट देंदा है, ते उस मनुख दा जीवन आनंद भरपूर हो जाँदा है। अकाल पुरखु दा नामु इक अैसी दवाई है, जिस दी बरकति नाल कोई वी रोग ज़ोर नहीं पा सकदा। जदों गुरू दी संगति विच रहि के मनुख दे मन विच, ते तन विच अकाल पुरखु नामु पिआरा ल्गण ल्ग पैंदा है, ताँ मनुख नूं कोई दुख महिसूस नहीं हुंदा। इस लई गुरू दी सरन विच पै के आपणे अंदर सुरति जोड़ के, सदा अकाल पुरखु दा नामु जपदे रहिणा चाहीदा है। इस तरहाँ करन नाल सारे पाप मन तों लहि जाँदे हन, ते मनुख दा मन पवितर हो जाँदा है। गुरू साहिब सानूं सपशट करके समझाँदे हन कि मैं तुहानूं इक सभ तों व्डा मंत्र द्सदा हाँ, उह मंत्र इह है कि जेहड़ा मनुख अकाल पुरखु दे गुण गाइन करदा रहिंदा है, अकाल पुरखु दे नामु दी वडिआई सुणदा ते जपदा रहिंदा है, उस मनुख दी हरेक तरहाँ दी बला ते बिपता दूर हो जाँदी है।

सुनत जपत हरि नाम जसु ता की दूरि बलाई ॥ महा मंत्रु नानकु कथै हरि के गुण गाई ॥४॥२३॥५३॥ (८१४)

इह सबद सानूं सपशट करके समझाँदा है, कि महा मंत्रु कोई खास शबदाँ दा जोड़ नहीं है, बलकि गुरबाणी दुआरा, अकाल पुरखु दे नामु दुआरा, उस अकाल पुरखु दी वडिआई ही सभ तों व्डा मंत्र है।

http://www.geocities.ws/sarbjitsingh/Bani2270GurMagPart01D20190821.pdf

भाई गुरदास जी दी हेठ लिखी वार विचों "*वाहिगुरू गुरू मंत्र है जप हउमै खोई*" वाली पंगती ताँ लोकाँ कोलों अनेकाँ वारी सुणी जाँदी है, परंतू इस पूरी वार बारे कोई विरला ही पड़्हन ते जानण दी कोशिश करदा है। किउंकि इस विच "*वाहिगुरू गुरू मंत्र है*" लिखिआ है, प्रचारकाँ ने इस दा अ्खरी अरथ लोकाँ मन विच वार वार पा के, इह नतीजा क्ढ दिता है

कि गुरबाणी अनुसार "वाहिगुरू" गुर मंत्र है, ते नाल ही आपणे कोलो बणा लिआ कि मंत्र दा अरथ रटन करना है। पूरे गुरू गरंथ साहिब विच किते वी इह नहीं लिखिआ गिआ है कि "वाहिगुरू" अकाल पुरख दा नामु है। इह वी लोकाँ ने वार वार प्रापेगंडा करके आपणे कोलों बणा लिआ है कि "वाहिगुरू" नामु है। इस तरहाँ दे प्रचार करके अ्जकल अकसर बहुत सारे गुरदुआरा साहिबाँ विच इही हो रिहा है, कि कोई बाणी पड़हे जाँ ना पड़हे, परंतू "वाहिगुरू" दा रटन जरूर कीता जाँदा है। कई रागीआँ ने ताँ गुरबाणी दे गाइन करन समें इस दी मिलावट वी खुले आम करनी शुरू दिती है।

गुर सिखहु गुर सिख है पीर पीरहुं कोई॥ शबद सुरत चेला गुरू परमेशर सोई॥ दरशन द्रिशटि धिआन धर गुरु मूरति होई॥ शबद सुरति कर कीरतन सतसंग विलोई॥ वाहिगुरू गुरू मंत्र है जप हउमैं खोई॥ आप गवाइ आप है गुण गुणी परोई ॥२॥ (१३-२-६)

अकसर वेखण विच आँउंदा है, कि होरनाँ धरमाँ अनुसार नामु जपण दी रवाइत दा भाव है, कि किसे मिथे गइे इक सबद (अ्खराँ दे जोड़) दा रटन करी जाणा है। इसे प्रभाव हेठ आ के कई सि्ख फिरकिआँ ने "वाहिगुरू" सबद दा रटन प्रचलत कर दिता है। गुरू साहिबाँ ने अकाल पुरखु दा कोई वी इक अखरी नाँ नीयत नहीं कीता है ते ना ही गुरबाणी विच इेका शबदी (इक सबद नूं वार वार दुहराई जाण) वालिआ नूं परवान कीता गिआ है।

नादी बेदी सबदी मोनी जम के पटै लिखाइआ ॥२॥ (६५४-६५५)

भाई गुरदास जी दी उुँपर लिखी वार नूं समझण दा यतन करीइे दा पता लगदा है कि भाई गुरदास जी समझा रहे रहे हन, कि गुरू दा सबद भाव गुरू गरंथ साहिब विच अंकित बाणी किस तरहाँ मंत्र बण सकदी है।

उुँपर लिखी वार विच भाई गुरदास जी सिधे तरीके नाल सपशट करके कहिंदे हन कि गुरू दे सि्खाँ विचों अनेकाँ लोक गुरू दे सि्ख ताँ हो सकदे हन, परंतू कोई विरला ही पीर, भाव गुरमुख हुंदाँ है, जिहड़ा कि गुरू दे दूसे मारग अनुसार चलदा है। गुरू दे शबद विच सुरत जोड़न वाला ही आपणे आप नूं गुरू दा असली चेला अखवा सकदा है। "*सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥ (९४३)*" गुरू दा शबद ही गुरू ते परमेसर है, किउंकि गुरू दे शबद दुआरा ही अकाल पुरखु बारे जाणिआ जा सकदा है ते उुस अकाल पुरखु नूं पाइिआ जा सकदा है। "*गुरु परमेसरु इेको जाणु ॥ जो तिसु भावै सो परवाणु ॥१॥ रहाउ ॥* (८६४)" गुरू दी मूरत अ्खाँ नाल नहीं वेखी जा सकदी, उुस लई आपणा धिआन गुरू दे शबद विच जोड़ना है, ताँ ही गुरू दी असली मूरत बारे पता लग सकदा है, "*गुर की मूरति मन महि धिआनु ॥ गुर कै सबदि मंत्रु मनु मान ॥ गुर के चरन रिदै लै धारउ ॥ गुरु पारब्रहमु सदा नमसकारउ ॥१॥* (८६४)"। इिथे ही बस नहीं, गुरू दी सतिसंगत विच बैठ के, आपणी सुरत नूं गुरू दे शबद नाल जोड़ के, गुरू दे सबद नूं रिड़कणा है, भाव चंगी तरहाँ गुरू दे शबद दुआरा अकाल पुरखु दे गुण गाइिन करने है ते उुनहाँ बारे वीचार करनी है। "वाहिगुरू", भाव "गुरू दा शबद", गुरू दा दिता होइिआ अजेहा मंत्र है, जिस नूं जप के असीं आपणी हउमैं दूर कर सकदे हाँ। अजेहा कुझ ताँ ही संभव है, जेकर असीं आपणा आप गवा के, आपणे आप नूं गुरू दे अ्गे अरपन करके, आपणे आप नूं गुरू दे शबद अनुसार ढाल के, अकाल पुरखु दे गुणाँ नाल परो लैंदे हाँ। "*मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥ तिसु सेवक के कारज रासि ॥*" (२८६-२८७)।

जे कर असीं भाई गुरदास जी दी पूरी वार नूं धिआन नाल पड़हदे ते वीचारदे ताँ असीं रटन वाले पासे ना तुरदे ते ना ही किसे होर कोलो गुमराह हुंदे, बलकि गुरू दी सतिसंगत विच बैठ के, गुरू दे शबद दी वीचार करदे, उुस अनुसार दिती गई सिखिआ नूं समझदे, ते गुरू दे शबद अनुसार अपणे जीवन नूं ढाल के आपणा मनुखा जीवन सफल करदे।

धिआन नाल पड़हीइे ताँ समझ आँउंदी है, कि भाई गुरदास जी ने आपणी किसे वी वार विच इिह नहीं किहा है, कि वाहिगुरू नामु है। इिह सभ कुझ असीं आपणे कोलो, ते लोकाँ ने आपसी प्रोपेगंडे नाल बणाइिआ है। भाई गुरदास जी ने आपणीआँ होर बहुत सारीआँ वाराँ विच चंगी तरहाँ सिधे तौर ते सपशट कीता है कि "वाहिगुरू" "सबदु" है। जिस तरहाँ कि हेठ लिखीआँ वाराँ साबत करदीआँ हन:

वाहिगुरू गुर शबदु लै पिरम पिआला चुप चबोला॥ (४-१७-७)
पउुणु गुरू गुर सबदु है वाहिगुरू गुर सबदु सुणाया॥ (६-५-१०)
वाहिगुरू सालाहणा गुर शबद अलाइे ॥१३॥ (६-१३-६)
सतिगुर पुरख दइिआल होइि वाहिगुरू सचु मंत्र सुणाया॥ (११-३-८)
निरंकार आकार कर जोति सरूप अनूप दिखाइिआ॥ वेद कतेब अगोचरा वाहिगुरू गुरु शबद सुणाया॥ (१२-१७-७)
धरमसाल करतार पुरु साधसंगति सच खंडु वसाइिआ॥ वाहिगुरू गुर सबदु सुणाइिआ ॥१॥ (२४-१-७)

भाई गुरदास जी ने ही आपणी वार विच सुचेत करके समझाइिआ है कि उुस जीभ उुपर लाहनत है, जिहड़ी कि गुरू गरंथ साहिब विच अंकित गुरू दे सबद तों बिनाँ किसे होर मंत्र नूं सिमरदी रहिंदी है। जिहड़े हथ पैर गुरू दी मति अनुसार दूसी

सेवा छ्ड के होर झूठी सेवा करदे रहिंदे हन, उहनाँ उपर वी लाहनत है। पीर नाल मुरीदाँ दी प्रीत ही असली सफल सेवा है, ते मनुख नूं आतमिक सुख सिरफ सतिगुर दी सरण विच आ के ही मिल सकदा है।

धिग जिहबा गुर सबद विणु होर मंत्र सिमरणी॥ विणु सेवा धिगु हथ पैर होर निहफल करणी॥ पीर मुरीदाँ पिरहड़ी सुख सतिगुर सरणी ॥१०॥ (२७-१०-६)

भाई गुरदास जी ने वी आपणी वार विच समझाइआ है कि "**मूलु मंत्र**" गुरू गरंथ साहिब विच अंकित कीता, गुरू दा सबद ही है, ते इह स्चा सबद सतिगुरू ने आप सुणाइआ है।

मंत्र मूलु गुरु वाक है सचु सबदु सतिगुरू सुणाइे॥ (४०-२२-२)

इस लई गुरसि्ख लई हरेक तरहाँ दा मंत्र (**बीज मंतर, मूल मंतर, महाँ मंत्र अते गुर मंत्र**) सभ गुरू गरंथ साहिब विच अंकित कीता, गुरू दा सबद ही है, भाव गुरू गरंथ साहिब विच अंकित कीती बाणी ही गुरसि्ख लई हरेक तरहाँ दा मंत्र है।

गुरू गरंथ साहिब विच नामु / नाम (Naam) दा लफज़ ४००० तों व्ध वारी आइिआ है, परंतू इह किते वी नहीं किहा गिआ है कि नामु दा अरथ "वाहिगुरू" लफज़ नूं वार वार दुहराई जाँणा है। इह साडा आपणा बणाइिआ होइिआ नियम है। होर धिआन नाल वेखिआ जावे ताँ समझ पैंदी है कि सवाइे भ्टाँ तों किसे वी गुरू साहिब ने आपणे बाणी विच "वाहिगुरू" लफज़ दी वरतों बिलकुल नहीं कीती है। भ्टाँ ने वी आपणी रचना विच "वाहिगुरू" लफज़ दी वरतों चौथी जोति दी उुसतत लई कीती है ते भाई गुरदास जी ने "वाहिगुरू" लफज़ दी वरतों "सबद" लई कीती है। की अ्ज दे आपणे आप नूं कहिलाण वाले सि्ख, गुरू साहिबाँ नालों जिआदा अकलमंद हो गइे हन? जिनहाँ ने आपणी नामु दी नवीं प्रीभाशा देणी शुरू कर दिती है। जेकर किसे वी गुरू साहिब ने गुरू गरंथ साहिब विच "वाहिगुरू" लफज़ दी वरतों नामु लई नहीं कीती है, ताँ असीं बाणी नूं बदलण वाले जाँ बाणी विच आपणी म्त अनुसार तबदीली करन वाले कौण हुंदे हाँ? जेकर गुरू हरिराइे साहिब ने आपणे पुतर नूं बाणी विच इिक तबदीली करन करके बेदखल कर दिता सी, ताँ सानूं वी समझ लैणा चाहीदा है कि असीं किस तरहाँ आपणे आप नूं सि्ख कहिला सकदे हाँ, ते जेकर लगातार अजेहा करदे रहे ताँ भविख विच साडा की हाल हो सकदा है।

गुर ते मुहु फेरे जे कोई गुर का कहिआ न चिति धरै ॥ करि आचार बहु संपउु संचै जो किछु करै सु नरकि परै ॥४॥ (१३३४)

गुरू गरंथ साहिब विच ६ गुरू साहिबाँ (गुरू नानक साहिब, गुरू अंगद साहिब, गुरू अमरदास साहिब, गुरू रामदास साहिब, गुरू अरजन साहिब, ते गुरू तेग बहादर साहिब) दी बाणी अंकित है। इिनहाँ ६ गुरू साहिबाँ विचों किसे वी गुरू साहिब ने आपणी बाणी विच "वाहिगुरू" लफज़ दी वरतों नहीं कीती है।

जेकर अ्जकल दे आपणे आप नूं कहिलाण वाले सि्खाँ दी नामु दी प्रीभाशाँ ("वाहिगुरू" लफज़ दा रटन) ठीक समझ लइीइे ते लागू कर दइीइे ताँ इिस बणाइे गइे असूल मुताबक किसे वी गुरू साहिबाँ नूं नामु जपणा नहीं आउंदा सी, किउंकि इिनहाँ ६ गुरू साहिबाँ विचों किसे इिक गुरू साहिब ने वी आपणी बाणी विच "वाहिगुरू" लफज़ दी वरतों नहीं कीती है। इिह ताँ "उुलटा चोर कोतवाल को डाँटे" वाली गल हो गइी, कि अ्जकल दे आपणे आप नूं कहिलाण वाले सि्खाँ ने गुरू साहिबाँ नूं ही गलत साबत करना शुरू कर दिता है। सानूं अकल ताँ गुरू गरंथ साहिब विच अंकित कीती गुरबाणी विचों लैणी सी, परंतू इिनहाँ लोकाँ ने ताँ गुरू साहिबाँ नूं ही अकल देणी शुरू कर दिती है।

गुर ते मुहु फेरे जे कोई गुर का कहिआ न चिति धरै ॥ करि आचार बहु संपउु संचै जो किछु करै सु नरकि परै ॥४॥ (१३३४)

गुरू हरि राइे साहिब ने आपणे पुतर नूं गुरबाणी दा इिक सबद बदलण ते तिआग दिता सी, पर की असीं सोचिआ है, कि असीं अजेहीआँ गलतीआँ जाण बुझ के रोजानाँ करदे रहीइे ते सानूं कोइी सजा नहीं मिलेगी। अ्जकल दे जिआदा तर सबद गाइिन करन वाले रागी जाँ लोक वी सबद विच वाध घाट करनी आपणी शान समझदे हन। कोइी विरला ही सबद गाइिन करन वाला बचिआ है, जिहड़ा कि गुरबाणी नूं बदलदा नहीं। "वाहिगुरू" अते "जी" सबद लाउंण दा ताँ फैशन आम ही हो गिआ है। "वाहिगुरू" सबद नूं वार वार बोली जाणाँ वी आम ही हो गिआ है, ते कइी लोक इिस नूं नामु जपणा कहिंदे हन।

जे अजेहा करना ठीक है ताँ बाहरली कौम वाला इिही सोचेगा कि इिनहाँ दे गुरू साहिबाँ नूं बाणी लिखणी नहीं आउंदी सी, जिस करके इिनहाँ लोकाँ नूं "वाहिगुरू" लफज लगा के सोध करनी पइी। "जी" लफज आम तौर ते किसे नूं इिजत नाल बलाउंण लइी वरतिआ जाँदा है, इिस सोध बारे दूसरे इिही अंदाजा लाउंणगे कि इिनहाँ दे गुरू साहिबाँ नूं बाणी लिखण समें इिह नहीं सी पता कि इिजत की हुंदी है। पिछले ५० सालाँ तों अजेही मिलावट दिनों दिन वधदी जा रही है।

कुराहे पिआ मनुख गुरू दी मति दुआरा ही जीवन दा सही रसता समझ सकदा है। माइिआ मोह दे घुप हनेरे विच फसिआ होइिआ मनुख गुरू दे सबद दुआरा सही ते उुँचे आतमक जीवन दा चानण हासल कर सकदा है। गुरू दुआरा उुस

अकाल पुरखु नाल जाण पछाण बण जाँदी है, जिस ने इहि सारा जगत पैदा कीता है। गुरू आतमक अवसथा विच करतार नाल इक सुर होण करके उस करतार दा रूप है, जो सभ कुझ करन दे समरथ है। गुरू उस परमेसर दा रूप है, जो पहिलाँ वी मौजूद सी, हुण वी मौजूद है अते सदा काइम रहेगा। गुरू साहिब सानूं सपशट करके समझाँदे हन कि मेरे लई गुरू दा शबद ही गुरू दी मूरती है ते गुरू दे सबद दुआरा बणी होई अजेही मूरती दा मेरे मन विच धिआन टिकिआ रहिंदा है। गुरू दे शबद दुआरा मेरा मन अकाल पुरखु दे नामु रूपी मंत्र नूं होर सभ मंत्राँ तों स्रेशट मंत्र समझदा है। मैं ताँ गुरू दे चरन आपणे हिरदे विच वसाई रृखदा हाँ ते गुरू नूं अकाल पुरखु दा रूप जाण के उस नूं सदा नमसकार करदा रहिंदा हाँ। गुरू साहिब सानूं सुचेत करदे हन, कि दुनीआँ दे भरमाँ ते झमेलिआँ विच भटक के इहि ग्ल नहीं भुल जाणी, कि गुरू तों बिना कोई वी जीव इस संसार रूपी समुंदर तों पार लंघ सकदा है। इहि गुरु दा शबद ही अजेहा मंत्र है जिस नूं असीं आपणे हिरदे विच वसा के आपणा मनुखा जीवन सफल कर सकदे हाँ।

गोंड महला ५ ॥ गुर की मूरति मन महि धिआनु ॥ गुर कै सबदि मंत्रु मनु मान ॥ गुर के चरन रिदै लै धारउ ॥ गुरु पारब्रहमु सदा नमसकारउ ॥१॥ मत को भरमि भुलै संसारि ॥ गुर बिनु कोइ न उतरसि पारि ॥१॥ रहाउ ॥ (८६४)

कुझ लोक भाई गुरदास जी दी हेठ लिखी वार दा हवाला दे के "वाहिगुरू" लफज़ दा मंत्र दी तरहाँ रटन करन लई अते "वाहिगुरू" लफज़ दा नामु जपण लई सबूत दिंदे हन। वाहिगुरू विच ४ अ्खर हन, व = विशनू नामु जपाइआ, ह = हरि हरि नामु जपाइआ, र = राम नामु जपाइआ, ग = गोविंद नामु जपाइआ। इहि चारे जाणे अकाल पुरखु विच समा गए *(पंचाइण विच जाइ समावै)।* इथे वी धिआन नाल वेखीए ताँ भाई गुरदास जी ने वी आपणी वार विच "वाहिगुरू" लफज़ दा रटन करन लई नहीं कहि रहे हन, बलकि इही समझा रहे हन कि *"वाहिगुरू जप मंत्र जपावै",* भाव सबद नूं जप के ही मंत्र बणाणा है, ताँ ही जिस अकाल पुरखु ने सभ नूं पैदा कीता है, उस अकाल पुरखु विच असीं समा सकदे हाँ। इथे इहि वी धिआन विच रृखणा है कि इस वार विच अकाल पुरखु उसतत करन ते उस बारे समझाण दा इक तरीका है।

सतिजुग सतिगुर वासदेव वावा विशना नाम जपावै॥ दुआपर सतिगुर हरीकिशन हाहा हरि हरि नाम धिआवै॥ त्रेते सतिगुर राम जी रारा राम जपे सुख पावै॥ कलिजुग नानक गुर गोबिंद गगा गोविंद नाम जपावै॥ चारे जागे चहु जुगी पंचाइण विच जाइ समावै॥ चारों अछर इक कर वाहिगुरू जप मंत्र जपावै॥ जहाँ ते उपजिआ फिर तहाँ समावै ॥४९॥१॥ (१-४९-७)

गुरू साहिब वी इही समझाँदे हन, कि मेरी की ताकत है, कि मैं अकाल पुरख दी कुदरति ते उस दी वीचार कर सकाँ? हे अकाल पुरख! मैं ताँ तेरे उतों इक वारी वी सदके जाण जोगा नहीं हाँ, अकाल पुरख दे साहमणे मेरी हसती बहुत ही छोटी है। हे निरंकार! तूं सदा थिर रहिण वाला है, जो तैनूं चंगा लृगदा है, उही कंम भला है, भाव, तेरी रज़ा विच रहिणा ही साडे वरगे जीवाँ लई भले वाली गॅल है। अणगिणत धरतीआँ ते अणगिणत जीव अकाल पुरख ने रचे हन? मनुखाँ दी किसे बोली विच कोई अैसा लफ़्ज़ ही नहीं जो इहि लेखा दृस सके। इहि बोली वी रृब वलों इक दात मिली है, पर इहि मिली है, उस अकाल पुरख दी सिफति सालाह करन लई। इस लई इहि कदी नहीं हो सकदा कि किसे बोली दे खास अ्खर नूं वार वार बोल के, मनुख अकाल पुरख दा अंत पा सके। इस लई गुरसि्ख ने अकाल पुरखु नूं अ्खराँ तृक सीमित नहीं करनाँ है।

असंख नाव असंख थाव ॥ अगंम अगंम असंख लोअ ॥ असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥ अखरी नामु अखरी सालाह ॥ अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥ अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥ अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥ जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥ जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥ जेता कीता तेता नाउ ॥ विणु नावै नाही को थाउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥ (४)

गुरू गरंथ साहिब विच **पृटी,** रुरागु *आसा महला १ पटी लिखी (४३२), रागु आसा महला ३ पटी (४३४)*रू, **बावन अखरी,** रु*गउड़ी बावन अखरी महला ५ (२५०), रागु गउड़ी पूरबी बावन अखरी कबीर जीउ की (३४०)*रू, **बारहमाह,** रु*तुखारी छंत महला १ बारह माहा (११०७), बारह माहा माँझ महला ५ घरु ४ (१३३)*रू, सिरलेख नाल लिखीआँ बाणीआँ बिलकुल इसे तरहाँ दे प्रमाणाँ दा प्रतीक हन। इनहाँ बाणीआँ विच गुरू साहिब अ्खराँ जाँ महीनिआँ दी पूजा करन लई नहीं कहि रहे हन, ते ना ही उहनाँ अ्खराँ जाँ महीनिआँ नूं जोड़ के रटन करन लई कहि रहे हन। बलकि सानूं इही समझाइआ जा रिहा है कि किस तरहाँ हरेक तरीके नाल अकाल पुरख दे गुण गाए जा सकदे हन ते उस दे नाल साँझ पाई जा सकदी है।

पाधा गुरमुखि आखीऐ चाटड़िआ मति देइ ॥ नामु समालहु नामु संगरहु लाहा जग महि लेइ ॥ सची पटी सचु मनि पड़ीऐ सबदु सु सारु ॥ नानक सो पड़िआ सो पंडितु बीना जिसु राम नामु गलि हारु ॥५४॥१॥ (९३८)

इस लोक विच ते परलोक विच अकाल पुरख ही सदा सहाइता करन वाला है, जिंद दे नाल रहिण वाला है, ते उह अकाल पुरख ही साडे कंम आउण वाला है। इस लई साध संगति विच बैठ के अकाल पुरख दा आतमक जीवन देण वाला नामु रूपी अंम्रित पीणा है। महाँ पुरखाँ दी बाणी ही मंत्र है, ते गुरबाणी दुआरा महाँ पुरखाँ दा दिता गिआ उपदेश ही मन दा

हंकार दूर करन लई समरथ है। आतमक शाँती वासते अकाल पुरख दा नामु ही सुखाँ दा सथान है ते इह सथान साध संगति विच गुरबाणी दुआरा खोज करन नाल ही लभिआ जा सकदा है। **इस लई हमेशाँ धिआन विच रखणा है कि गुरबाणी रटन करन लई कोई मंत्र नहीं है, इस बाणी विचों अकाल पुरख नूं खोजणाँ है।**

बाणी मंतु महा पुरखन की मनहि उतारन माँन कउ ॥ खोजि लहिए नानक सुख थानाँ हरि नामा बिस्राम कउ ॥२॥१॥२०॥
(१२०८)

लेख दा आरंभ लेख दा संखेप लेख दा सार, निचोड़ जाँ मंतव

जे कर उपर लिखीआँ, गुरबाणी दीआँ सिखिआवाँ, नूं इकठा करीइे ताँ असीं निसचे नाल समझ सकदे हाँ, कि गुरू गरंथ साहिब अनुसार किसे तरहाँ दा रटन प्रवान नहीं है।

- गुरदुआरा साहिबाँ विच आम तौर ते वेखण विच आउंदा है कि प्रचारक गुरबाणी दे कुझ सबदाँ दे इकठ नूं वख वख तरहाँ दे मंत्राँ दा नाँ दिंदे रहिंदे हन, ते उस नूं सिध करन लई तरहाँ तरहाँ दे प्रमाण वी दिंदे रहिंदे हन, परंतू किसे वी प्रचारक ने कदे वी आपणा प्रमाण गुरू गरंथ साहिब दे आधार ते देण दी कोशिश नहीं कीती है।
- गुरू गरंथ साहिब विच अंकित बाणी दे आधार ते वेखिआ जावें ताँ किते वी इह नहीं किहा कि किसे तरहाँ दा कोई खास अखरी शबद जाँ कुझ अखरी शबदा दा जोड़, **बीज मंत्र, मूल मंत्र, महाँ मंत्र,** जाँ **गुर मंत्र** है। इह सारी वंड साडी आपणी बणाई होई है।
- दसवें पताशाह गुरू गोबिंद सिंघ साहिब ने सारे सिखाँ नूं हुकम कीता सी, कि हरेक सिख ने गुरू गरंथ साहिब नूं ही आपणा गुरू समझणा है। इस लई सिख ने जो वी सिखिआ लैणी है जाँ निरणा करना है, उह सिरफ ताँ सिरफ गुरू गरंथ साहिब दे आधार ते ही करना है ते गुरू गरंथ साहिब विचों ही खोजणा है।
- **अकाल पुरखु दा नामु ही बीज मंतु है ते गिआन दा सोमा है, जिहड़ा कि सबद गुरू दी संगति विच रहि के मिल सकदा है।**
- **गुरू दे सबद दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दा गीत गाइिआ करो, किउंकि अकाल पुरखु नूं वस करन दा इह सभ तों सेशट बीज मंत्र है।**
- सतिगुरू दे शबद दुआरा अकाल पुरखु दी सिणति सालाह दी बाणी नाल मनुख नूं सोझी आ जाँदी है, मनुख अकाल पुरखु दा नामु मंत्र आपणे हिरदे विच टिका के रखदा है, ते अडोल अवसथा विच टिकिआ रहि सकदा है।
- गुरू साहिब समझाँदे हन कि मेरे हिरदे विच सतिगुरू दा शबद रूपी महाँ बली मंत्र वस रिहा है, मैं अकाल पुरखु दा नामु सुणदी रहिंदी हाँ, इस वासते मैं विकाराँ दी कालख नाल काली नहीं होई हाँ।
- **महा मंतु कोई खास शबदाँ दा जोड़ नहीं है, बलकि गुरबाणी दुआरा, अकाल पुरखु दे नामु दुआरा, उस अकाल पुरखु दी वडिआई ही सभ तों वडा मंत्र है।**
- पूरे गुरू गरंथ साहिब विच किते वी इह नहीं लिखिआ गिआ है कि "वाहिगुरू" अकाल पुरख दा नामु है। इह वी लोकाँ ने वार वार प्रापेगंडा करके आपणे कोलो बणा लिआ है, कि "वाहिगुरू" दा रटन नामु है।
- **गुरू साहिबाँ ने अकाल पुरखु दा कोई वी इक अखरी नाँ नीयत नहीं कीता है ते ना ही गुरबाणी विच इेका शबदी वालिआ नूं परवान कीता गिआ है।** ***"नादी बेदी सबदी मोनी जम के पटै लिखाइिआ ॥२॥ (६५४-६५५)"***
- भाई गुरदास जी आपणी वार विच सपशट करके समझाँदे हन कि गुरू दा सबद भाव गुरू गरंथ साहिब विच अंकित बाणी किस तरहाँ मंत्र बण सकदी है। आपणा धिआन गुरू दे शबद विच जोड़ना है, गुरू दे शबद दुआरा अकाल पुरखु दे गुण गाइन करके आपणी हउमैं दूर करनी है। आपणा आप गवा के, आपणे आप नूं गुरू दे अगे अरपन करके, आपणे आप नूं गुरू दे शबद अनुसार ढाल के, अकाल पुरखु दे गुणाँ नाल परो लैणा है।
- भाई गुरदास जी ने आपणी किसे वी वार विच इह नहीं किहा है, कि वाहिगुरू नामु है।
- **भाई गुरदास जी ने आपणीआँ होर बहुत सारीआँ वाराँ विच सपशट कीता है कि "वाहिगुरू", "सबदु" है।**
- भाई गुरदास जी ने ही आपणी वार विच सुचेत करके समझाइिआ है कि उस जीभ उपर लाहनत है, जिहड़ी कि गुरू गरंथ साहिब विच अंकित गुरू दे सबद तों बिनाँ किसे होर मंत्र नूं सिमरदी रहिंदी है। ***"धिग जिहबा गुर सबद विणु होर मंत्र सिमरणी॥"***
- भाई गुरदास जी ने वी आपणी वार विच समझाइिआ है कि "मूलु मंत्र" गुरू गरंथ साहिब विच अंकित कीता गुरू दा सबद ही है, ते इह सचा सबद सतिगुरू ने आप सुणाइिआ है। ***"मंत्र मूलु गुरु वाक है सचु सबदु सतिगुरू सुणाइे॥*** *(४०-२२-२)"*

- गुरसि्ख लही हरेक तरहाँ दा मंत्र (बीज मंतर, मूल मंतर, महाँ मंत्र अते गुर मंत्र) सभ गुरू गरंथ साहिब विच अंकित कीता, गुरू दा सबद ही है, भाव गुरू गरंथ साहिब विच अंकित कीती बाणी ही गुरसि्ख लही हरेक तरहाँ दा मंत्र है।
- गुरू गरंथ साहिब विच नामु / नाम (Naam) दा लफज़ ४००० तों व्ध वारी आइिआ है, परंतू इिह किते वी नहीं किहा गिआ है कि नामु दा अरथ "वाहिगुरू" लफज़ नूं वार वार दुहराही जाँणा है।
- गुरू गरंथ साहिब विच ६ गुरू साहिबाँ दी बाणी अंकित है। इिनहाँ ६ गुरू साहिबाँ विचों किसे वी गुरू साहिब ने आपणी बाणी विच "वाहिगुरू" लफज़ दी वरतों नहीं कीती है।
- अ्जकल कोही विरला ही सबद गाइिन करन वाला बचिआ है, जिहड़ा कि गुरबाणी नूं बदलदा नहीं जाँ वाध घाट नहीं करदा। पिछले ५० सालाँ तों अजेही मिलावट दिनों दिन वधदी जा रही है।
- गुरू साहिब सानूं सपशट करके समझाँदे हन कि मेरे लही गुरू दा शबद ही गुरू दी मूरती है ते गुरू दे शबद राहीं मेरा मन अकाल पुरखु दे नामु रूपी मंत्र नूं होर सभ मंत्राँ तों सेशट मंत्र समझदा है। गुरु दा शबद ही अजेहा मंत्र है जिस नूं असीं आपणे हिरदे विच वसा के आपणा मनुखा जीवन सफल कर सकदे हाँ।
- इिह कदी नहीं हो सकदा कि किसे बोली दे खास अ्खर नूं वार वार बोल के, मनुख अकाल पुरख दा अंत पा सके। इिस लही गुरसि्ख ने अकाल पुरखु नूं अ्खराँ त्क सीमत नहीं करनाँ है।
- गुरू गरंथ साहिब विच पूटी, बावन अखरी, बारहमाह, सिरलेख नाल लिखीआँ बाणीआँ विच गुरू साहिब अ्खराँ जाँ महीनिआँ दी पूजा करन लही नहीं कहि रहे हन, ते ना ही उहनाँ अ्खराँ जाँ महीनिआँ नूं जोड़ के रटन करन लही कहि रहे हन।
- महाँ पुरखाँ दी बाणी ही मंत्र है, ते गुरबाणी दुआरा महाँ पुरखाँ दा दिता गिआ उपदेश ही मन दा हंकार दूर करन लही समरथ है। इिस लही हमेशाँ धिआन विच र्खणा है कि गुरबाणी रटन करन लही कोही मंत्र नहीं है, इिस गुरबाणी विचों अकाल पुरख नूं खोजणा है।

लेख दा आरंभ लेख दा संखेप लेख दा सार, निचोड़ जाँ मंतव

गुरू गरंथ साहिब विच अंकित बाणी ही गुरसि्ख लही मंत्र है, जिस विचों अकाल पुरख नूं खोजणाँ है। गुरू गरंथ साहिब विच किते वी इिह नहीं किहा गिआ है कि किसे तरहाँ दा कोही खास अ्खरी शबदा दा जोड़, बीज मंतर, मूल मंतर, महाँ मंतर, जाँ गुर मंत्र है। अकाल पुरखु दा नामु ही बीज मंतु है ते गिआन दा सोमा है, जिहड़ा कि सबद गुरू दी संगति विच रहि के मिल सकदा है। महा मंतु कोही खास शबदाँ दा जोड़ नहीं है, बलकि गुरबाणी दुआरा, अकाल पुरखु दे नामु दुआरा, उुस अकाल पुरखु दी वडिआही ही सभ तों व्डा मंत्र है। पूरे गुरू गरंथ साहिब विच किते वी इिह नहीं लिखिआ गिआ है कि "वाहिगुरू" अकाल पुरख दा नामु है। गुरबाणी विच इेका शबदी वालिआ नूं परवान नहीं कीता गिआ है। "गुरू दा शबद", गुरू दा दिता होइिआ अजेहा मंत्र है, जिस नूं जप के असीं आपणी हउुमैं दूर कर सकदे हाँ। अजेहा कुझ ताँ ही संभव है, जेकर असीं आपणा आप गवा के, आपणे आप नूं गुरू दे अ्गे अरपन करके, आपणे आप नूं गुरू दे शबद अनुसार ढाल के, अकाल पुरखु दे गुणाँ नाल परो लैंदे हाँ। भाही गुरदास जी ने आपणीआँ होर बहुत सारीआँ वाराँ विच सिधे तौर ते सपशट कीता है कि "वाहिगुरू" "सबदु" है ते "मूलु मंत्र" गुरू गरंथ साहिब विच अंकित कीता गुरू दा सबद ही है। गुरसि्ख लही हरेक तरहाँ दा मंत्र (बीज मंतर, मूल मंतर, महाँ मंत्र अते गुर मंत्र) सभ गुरू गरंथ साहिब विच अंकित कीता, गुरू दा सबद ही है, भाव गुरू गरंथ साहिब विच अंकित कीती बाणी ही गुरसि्ख लही हरेक तरहाँ दा मंत्र है। इिस लही हमेशाँ धिआन विच र्खणा है कि गुरबाणी रटन करन लही कोही मंत्र नहीं है, इिस बाणी विचों अकाल पुरख नूं खोजणा है।

"वाहिगुरू जी का जलसा वाहिगुरू जी की फतिह"

(डा: सरबजीत सिंघ) (Dr. Sarbjit Singh)
RH1 / E-8, Sector-8, Vashi, Navi Mumbai - 400703.
Email = sarbjitsingh@yahoo.com,
Web= http://www.geocities.ws/sarbjitsingh/
http://www.sikhmarg.com/article-dr-sarbjit.html